भारत एक, भाषा अनेक

INNOVATION CODE - JHK/18/04

हमारे देश में एक प्रसिद्ध कहावत है 'एक कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी'। अनेक भाषाओं , बोलियों और शैलियों के कारण ग्रामीण भारत के विद्यालयों में शिक्षकों को एक विशेष समस्या का सामना करना पड़ता है। अक्सर देखा गया है कि छात्रों की स्थानीय बोली शिक्षक समझ नहीं पाते। छात्र भी भाषा बोध में कमी के कारण शिक्षकों की बात समझने में विफल रहते हैं। स्वाभाविक है कि जब छात्र और शिक्षक एक दूसरे से ठीक से बात ही नहीं कर पाएंगे, तो शिक्षा का उद्देश्य कैसे पूरा होगा। यह समस्या दुधारी तलवार की तरह है। भाषा संबंधी अंतर का प्रभाव छात्रों के शिक्षा के प्रति रुझान और शैक्षिक परिणामों में गिरावट के तौर पर देखा जा सकता है। वहीं, शिक्षकों के मन में कार्य के प्रति उदासीनता दिखने लगती है। वह राष्ट्र निर्माण में अपने दायित्व को चाह कर भी पूरा नहीं पाते। लेकिन कहते है न कि 'जहां चाह–वहां राह'। भाषा की भूल भुलैया से बाहर निकलने के लिए शिक्षकों ने 'भारत एक, भाषा अनेक' नवाचार को विकसित किया है। शिक्षकों ने इस नवाचार के माध्यम से इस जटिल समस्या के कई शून्य निवेश समाधान प्रस्तुत किए हैं।

नवाचारी शिक्षकों के नाम

1. कविता, राजकीय माध्यमिक विद्यालय बरियातु, रांची
2. बिनय कुमार वर्मा, उत्क्रमित मध्य विद्यालय सुखजोरा, जमतारा
3. सतेन्द्र कुमार सिंह, उत्क्रमित मध्य विद्यालय कुरुम, रामगढ़
4. महेन्द्र कुमार, उत्क्रमित मध्य विद्यालय मायापुर, हजारीबाग
5. आरफा तबस्सुम, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नईसराई, रांची
6. शैलेश कुमार, राजकीयकृत मध्य विद्यालय झाबरी, रामगढ़
7. चन्द्रशेखर प्रसाद, राजकीय मध्य विद्यालय मांडू, रामगढ़

नवाचार के लाभ :

◆ संवाद अंतर दूर होने से छात्रों और शिक्षकों के बीच बेहतर सामंजस्य स्थापित होता है।

◆ छात्रों को पाठ पढ़ने और समझने में आने वाली परेषानियां दूर होती है। जिससे शिक्षा के प्रति उनका रुझान बढ़ता है।

◆ अपने बच्चों के मन में शिक्षा और विद्यालय के प्रति उत्साह देखकर अभिभावकों और समुदाय की भी विद्यालय में सहभागिता बढ़ती है।

◆ छात्रों के मन में अपनी बोली के साथ साथ, अन्य भाषाओं के लिए भी सम्मान उत्पन्न होता है।

प्रभाव क्षेत्र — सीखने के परिणामों में, कक्षा अनुकूल सीखने के स्तर में, तथा शिक्षकों के प्रेरणा स्तर में सुधार, एवं कक्षा में स्वयं सीखने का वातावरण

नवाचार का सार

इस नवाचार के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का उद्देश्य शिक्षक और छात्रों के बीच सफल संवाद स्थापित करना है। शिक्षक छोटे–छोटे प्रयासों से शुरुआत करते हैं और फिर धीरे–धीरे छात्रों को अन्य गतिविधियों में शामिल करने की कोशिश करते है। इस गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए किसी विशेष टी.एल.एम की आवश्यकता नहीं है। छात्र कई तरह के रचनात्मक कार्यों के द्वारा भाषा ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। यह नवाचार शैक्षिक सत्र के आरंभ में सप्ताह में 2 से 3 बार यानि कम समय के अंतराल पर आयोजित करने से छात्रों को लाभ होगा। शैक्षिक सत्र शुरु होने 5 से 6 महीने के बाद इस नवाचार को सप्ताह में एक बार या फिर 15 दिन में एक बार आयोजित कर सकते हैं। इससे पढ़े हुए पाठ के पुनः अध्ययन और भाषा के सामान्य ज्ञान को सुधारने में छात्रों को मदद मिलेगी।

विभिन्न गतिविधियां

1. सहभागिता से भाषा का समाधान

संक्षिप्त परिचयः स्वस्थ संवाद सुदृढ़ संबंधों की नींव है। विद्यालय में छात्रों और शिक्षकों के बीच संवाद अंतर दूर करने के लिए, स्थानीय समुदाय, अभिभावकों से लेकर कक्षा में छात्रों और सह शिक्षकों की सहभागिता ली गई है। शिक्षक समुदाय से जुड़ कर स्थानीय समुदाय और अभिभावकों में उन लोगों से संपर्क करते हैं, जिन्हें स्थानीय/क्षेत्रीय बोली के साथ–साथ राष्ट्रीय/राज्य की आधिकारिक भाषा का ज्ञान भी हो। विद्यालय में भी कुछ छात्र और शिक्षक ऐसे हो सकते हैं जिन्हें क्षेत्रीय भाषा के साथ–साथ आधिकारिक भाषा का ज्ञान भी हो। यह लोग शिक्षक की अनुवादक की भांति मदद करते हैं। कक्षा में

पढ़ाए जा रहे विषय का यह मौखिक अनुवाद करके, विषय को समझाने की कोशिश करते हैं। और यदि छात्र शिक्षक को अपनी बात नहीं समझा पाता, तो कक्षा में उपस्थित अनुवादक छात्र की कही बात का अनुवाद करके सहयोग करते हैं।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः इस गतिविधि से विद्यालय में शिक्षा का स्तर सर्वांगीण रूप से सुधर सकता है। छात्रों की किसी भी पाठ को पढ़ने, समझने और लिखने की क्षमता बढ़ती है।

योजनाः शिक्षके स्थानीय समुदाय में इस गतिविधि के लिए उपयुक्त लोगों की सूची तैयार करके, उनसे संपर्क करें। निर्धारित तिथि और समय पर उन्हें विद्यालय में आमंत्रित करें। उनके साथ कक्षा में गतिविधि से पूर्व विषय के बारे में चर्चा करें और किस प्रकार छात्र सरलता से आधिकारिक भाषा को समझ सकें, इस बारे में सुझाव एकत्रित करने होंगे।

क्रियान्वयनः इस गतिविधि का क्रियान्वयन दो तरह किया जा सकता है। पहला है पाठ्यक्रम के विषयों के माध्यम से और दूसरा है रोचक गतिविधियों के द्वारा।

(पहला) कक्षा में जिन बच्चों का भाषा बोध दूसरों के मुकाबले ठीक है, उनका एक अलग समूह बना लेते हैं। इन छात्रों को कक्षा में होने वाले पठन–पाठन में अन्य छात्रों के सामने आ रही परेशानियों को दूर करने और उनका सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यदि कोई छात्र या शिक्षक इस तरह मदद नहीं कर सकता, तो समुदाय के सदस्य कक्षा में अनुवादक की भांति सहयोग करते हैं।

(दूसरा) रोचक गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है, जैसे कि 'शब्दों की अंताक्षरी', 'रोल प्ले', 'वाद–विवाद', 'मौखिक परीक्षा' इत्यादि के माध्यम से छात्रों का भाषा बोध बढ़ा सकते हैं। शिक्षक इन गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए समुदाय के सदस्यों का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

विभिन्न खेलों और गतिविधियों के उदाहरण–

'शब्दों की अंताक्षरी'– इसमें छात्र कक्षा के भीतर ही समुदाय के चुनिंदा सदस्यों/अभिभावकों की मदद से पहले विभिन्न अक्षरों से शुरु होने वाले शब्द और उनका मतलब सीखेंगे। उसके बाद शिक्षक सभी छात्रों को विभिन्न समूहों में बांटकर शब्दों की अंताक्षरी खेलेंगे। इस प्रक्रिया में यदि कोई समूह किसी अक्षर पर अटकता है, तो शिक्षक एवं समुदाय के सदस्य उनकी मदद भी कर सकते हैं। समुदाय के सदस्य स्वयं भी इन छात्रों के समूह का हिस्सा बनकर, अंताक्षरी में भाग ले सकते हैं।

रोल प्ले– इस के अंतर्गत छात्र कोई भी लघु नाटक/कहानी/रामलीला या प्रसिद्ध कार्टून किरदारों का मंचन कर सकते हैं। मौखिक संवाद सीखने और याद करने के लिए छात्रों की मदद समुदाय के सदस्य कर सकते हैं। इसी प्रकार वाद–विवाद या मौखिक परीक्षाओं में भी समुदाय के सदस्य, अभिभावक सहभागी बन सकते हैं।

2. दीवार पत्रिका

संक्षिप्त परिचयः सामान्य गतिविधियों को रोचक बना कर, उनकी स्थानीय भाषा और आधिकारिक भाषा के ज्ञान को कल्पना और सीखने की क्षमता को पंख दिए जाते हैं। 'दीवार पत्रिका' एक ऐसी ही गतिविधि है जिसमें कक्षा की दीवार के एक हिस्से पर छात्र अलग–अलग अक्षरों, शब्दों, वाक्यों को स्वयं इंद्रधनुष के रंगों में चार्ट पेपर पर लिखकर सजाते हैं। इस गतिविधि से बच्चों की कल्पना शक्ति को दिशा मिलती है और वह नए शब्द सीखने, लिखने और पढ़ने में स्वाभाविक रूप से सक्षम बनते हैं। कक्षा में लगे चित्रों, शब्दों को बार–बार देखने से छात्रों की Sight tranining यानि 'दृष्टि प्रशिक्षण' भी होता

है, मतलब छात्रों का मस्तिष्क धीरे–धीरे उन शब्दों को आत्मसात करने लगता है।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि छात्रों के सामान्य भाषा ज्ञान के साथ–साथ विषय ज्ञान को भी बढ़ाती है। इस गतिविधि का क्रियान्वयन कक्षा स्तर के साथ–साथ विद्यालय स्तर पर भी किया जाता है। इसमें प्रत्येक कक्षा से सबसे अच्छे चित्र, शब्द, वाक्य इत्यादि प्रधानाचार्य के कक्ष के बाहर की दीवार पर लगाए जाते हैं और इस दीवार को 'दीवार पत्रिका' या 'बच्चों का इंद्रधनुष' नाम दिया जा सकता है।

योजना/विधिः शिक्षक छात्रों को समूह में बांट कर, अलग अलग शब्दों और चित्रों को बनवाते हैं। छात्र अखबारों से संबंधित अक्षर, चित्र भी काट कर चार्ट पेपर पर चिपका सकते हैं। साथ ही, कक्षा की दीवार के एक हिस्से पर 'बच्चों का इंद्रधनुश' लिखकर, उस जगह को चार्ट पेपर चिपकाने के लिए निर्धारित कर सकते हैं।

क्रियान्वयनः इस गतिविधि का क्रियान्वयन तीन चरणों में किया जाता है।

(पहला) शिक्षक छात्रों को पाठ्यक्रम के अनुसार अक्षरों/शब्दों/वाक्यों का बोध कराते हैं।

(दूसरा) शिक्षक पढ़े गए अक्षरों/शब्दों/वाक्यों को चार्ट पेपर पर बनाने का दायित्व छात्रों के समूह को देते हैं।

(तीसरा) छात्रों द्वारा तैयार किए गए चार्ट पेपर दीवार पर सजाए जाते हैं। छात्रों को अक्षर/शब्द/वाक्य के साथ–साथ रंगों के नाम, फलों, फूलों या फिर पाठ्यक्रम का कोई भी विषय सिखाया जा सकता है।

3. खाली पैकेट द्वारा शिक्षा

संक्षिप्त परिचयः स्थानीय बोल–चाल और उच्चारण का प्रभाव हमेशा से हिन्दी या आधिकारिक राज्य भाषा पर रहा है। सिर्फ किताबों के माध्यम से भाषा बोध कराना नीरस बन सकता है। तो प्रश्न उठता है कि किस प्रकार बच्चों को भाषा के साथ जोड़ा जाए? उन्हें सही भाषा सीखेने और उच्चारण के लिए प्रेरित किया जाए। इसका समाधान है – खाली पैकेट से शिक्षा। जी हां, घर के सामान से लेकर बच्चों के मनपसंद भुजिया– बिस्किट– चिप्स के पैकेट, उन्हें वह सिखा सकते हैं जिसे सिर्फ किताबों से समझाना मुश्किल है।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः यह गतिविधि छात्रों के शब्दकोश, उच्चारण, सामान्य ज्ञान और अभिव्यक्ति को सुध ारती है। इसके क्रियान्वयन के लिए एक बड़े डिब्बे में खाली पैकेट और लिफाफे (wrapper) एकत्रित करने की आवश्यकता है। यह गतिविधि साप्ताहिक स्तर पर आयोजित की जा सकती है।

योजनाः शिक्षक छात्रों से घर पर इस्तेमाल होने वाले सामान के खाली पैकेट और लिफाफे जमा करने के लिए कहें। कक्षा में एक डिब्बे के भीतर इन पैकेट, लिफाफों को झाड़ कर एकत्रित कर लें।

क्रियान्वयनः कक्षा में बारी–बारी प्रत्येक छात्र को डिब्बे में रखे पैकेट निकाल कर उस पर लिखे उत्पाद का नाम और अन्य जानकारियां पढ़कर सुनाने के लिए कहें।

- यदि छात्र ठीक से पढ़ नहीं पाता या फिर उच्चारण गलत करता है, तब शिक्षक उच्चारण ठीक कराते हैं।
- इस क्रम में छात्रों को न सिर्फ हिन्दी बल्कि अंग्रेजी के शब्दों का बोध भी होता है। खाली पैकेट को केंद्र में रखते हुए विभिन्न विषयों पर भी छात्रों के साथ चर्चा की जा सकती है। जैसे कि– विभिन्न खाद्य पदार्थों के पोषक तत्व और महत्व, स्थानीय खेती और उत्पाद इत्यादि। ■